International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745
Received: 10-08-2025, Accepted: 09-09-2025, Published: 24-09-2025
Volume 7, Issue 3, 2025, Page No. 59-62

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों की समीक्षा

रोहित कुमार केशर[1], डॉ. अरूंधती शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ, भारत
[2] शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापकएवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, सी. एम.दुबे स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
"राजनीतिक विचार राजनीति, राज्य और सरकार से संबंधित मामलों पर विचारकों द्वारा व्यक्त विचारों का योग है। यह प्रकृति मेंऐतिहासिक है क्योंकि इसे इतिहास के रूप में वर्णित किया गया है। इसका उद्देश्य उन मुद्दों का विश्लेषण, जांच और मूल्यांकन करना है जो सार्वभौमिक चिंता के हैं और विचारकों के लिए रुचि रखते हैं। राजनीतिक विचारधारा हमारी सामाजिक वास्तविकता को समझाती है, इसेएक निश्चित तरीके से व्याख्या करती है, परस्पर संबंधित सिद्धांतों काएक समूह विकसित करती है, राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति पर सवाल उठाती है और उचित कार्रवाई का निर्देश देती है। इस प्रकार, राजनीतिक विचार व्याख्यात्मक या व्याख्यात्मक होने के साथ–साथ मानक भी होते हैं। राजनीतिक विचार राजनीति से संबंधित होते हैं लेकिन वे इतिहास से भी संबंधित होते हैं। इस प्रकार, राजनीतिक विचारों को उनकेऐतिहासिक संदर्भ में समझना उन्हें वास्तविक अर्थों में समझने के लिए आवश्यक है।एक विचारक के राजनीतिक विचार उसके समय की उम्र को ध्यान में रखते हुए उभरते हैं और इस प्रकारएक विचारक के राजनीतिक दर्शन को उसकेऐतिहासिक संदर्भ में ही समझा जा सकता है।"

मूलशब्द: राजनीतिक विचार, राजनीतिक दर्शन, राजनीतिक विचारधारा, राजनीतिक सिद्धांत, अंबेडकरवाद इत्यादि।

डॉ. अंबेडकर के राजनीतिक विचार आधुनिक भारत के लोगों की सोच से मिलते–जुलते हैं और प्रासंगिक भी हैं। डॉ. अंबेडकर की सोच की तरह आज की आबादी काएक बड़ा हिस्सा उच्चतम वर्ग के प्रति द्वेष रखता है और सभी उसका पतन चाहते हैं लेकिन वेएकजुट नहीं हो सकते। वे उच्चतम से मुक्ति चाहते हैं लेकिन उच्च, निम्न और निम्नतम के साथएक नहीं होना चाहते हैं, अन्यथा वे सभी उनके स्तर पर पहुंच जाएंगे और उनके जैसे बन जाएंगे। जो लोग ऊँचे हैं वे अपने से ऊपर के उच्चतम और उच्च वर्ग को उखाड़ फेंकना चाहते हैं लेकिन वे इस कार्य में निम्न और निम्नतम के साथ हाथ नहीं मिलाना चाहते हैं, अन्यथा वे उनके स्तर पर उठ जाएंगे और पदानुक्रम में उनके बराबर हो जाएंगे। जो लोग निम्न हैं वे उच्चतम, उच्च और उच्चतम का पतन चाहते हैं लेकिन निम्नतम के साथ मिलकर इसेएक सामान्य लक्ष्य नहीं बनाना चाहते क्योंकि उन्हें डर है किऐसा करने से निम्नतम स्तर ऊपर उठ जाएगा और वे उनके जैसे बन जाएंगे।
डॉ. आंबेडकर का चिंतन बहुआयामी रहा है। सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने के बाद उनकी दृष्टि राजनीतिक, सामाजिक, कानूनी और सांस्कृतिक मुद्दों की ओर मुड़ गई। आम तौर पर डॉ. आंबेडकर की छविएक संविधान विशेषज्ञ और विधिवेत्ता की है। इतना ही नहीं, उन्हें समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ और दलितों के हितैषी के रूप में भी जाना जाता है। यदि उनके लेखों और भाषणों का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि डॉ. आंबेडकरएक समाजशास्त्री भी थे, हालांकि उन्होंने न तो समाजशास्त्र का औपचारिक अध्ययन किया और न ही उन्होंने खुद को समाजशास्त्री के रूप में प्रस्तुत किया। डॉ. आंबेडकर के जीवन का मुख्य उद्देश्य दलित समाज की परंपरागत गुलामी के कारणों की खोज करके और उन्हें उचित रूप से दूर करके दलितों को मुक्ति दिलाना था।ऐसा लगता है कि उनके सामने कई कठिन प्रश्न थे। क्या दलित वर्ग भारतीय आबादी का हिस्सा है याएक अलग तत्व है? यदि दलित भारत की आम आबादी का हिस्सा हैं, तो इतिहास के किन कालखंडों में वे आम आबादी से अलग हुए? आम जनता से इसके अलग होने के क्या कारण थे और वे कौन लोग थे जिन्होंने दलितों पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक अक्षमताएं थोपी और उन्हें जन्म से लेकर जन्म तक गुलामी का जीवन जीने के लिए मजबूर किया।

बाबासाहेब के राजनीतिक विचार

अंबेडकर का राजनीतिक दर्शन मानव जीवन के सबसे तात्कालिक और संचित मुद्दों से निकटता से जुड़ा था और अनिवार्य रूप से समाज के तथ्य के अनुरूप था। इस प्रकार, अंबेडकर के राजनीतिक विचारों को समझने के लिए, राज्य, सरकार, समाज और व्यक्ति के अंतर्संबंधों के बारे में उनके विचारों को समझना आवश्यक होगा। अंबेडकर द्वारा प्रस्तुत राजनीतिक सिद्धांत की अवधारणाओं, विचारधाराओं और राजनीतिक तर्कों के बारे में विचार–विमर्श करना भी आवश्यक होगा। बी.आर. अंबेडकर महान बुद्धिजीवी और समाज सुधारक थे। अपने करियर के शुरुआती दौर में ही उन्हें अछूतों की दुर्दशा काएहसास हुआ। उन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अंबेडकर का राजनीतिक दर्शन विशेष रूप से पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांत के संकट को फिर से सुलझाने और आम तौर पर लोगों की लड़ाई का नेतृत्व करने में सहायता करता है। अंबेडकर समकालीन समय में दलित आंदोलन के उदय के साथएक प्रमुख राजनीतिक दार्शनिक के रूप में उभरे हैं। वे 1920 के दशक की शुरुआत में भारतीय सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में उभरे और भारतीय समाज के सबसे निचले तबके यानी अछूतों के उत्थान के लिए सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रयासों के प्रमुख रहे। बाबासाहेबएक महान शोधकर्ता थे जिन्होंने अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, विधिवेत्ता, शिक्षाविद, पत्रकार, सांसद और समाज सुधारक तथा मानवाधिकारों के समर्थक के रूप में असाधारण योगदान दिया। बाबासाहेब ने भारत में अछूतों को संगठित,एकजुट और उत्साहित किया ताकि वे सामाजिक निष्पक्षता के अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राजनीतिक साधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें।

अम्बेडकर के राजनीतिक प्रश्न

लोगों और उनके धर्म का मूल्यांकन सामाजिक नैतिकता पर आधारित सामाजिक मानकों के आधार पर किया जाना चाहिए। यदि धर्म को लोगों की भलाई के लिए आवश्यक माना जाता है, तो किसी अन्य मानक का कोई अर्थ नहीं होगा। बी. आर. अंबेडकर ने अवधारणा के संबंध में विभिन्न सिद्धांतों और संघों का प्रस्ताव दिया या उन्हें अद्यतन किया है जोएक रणनीति पूर्ण और सुसंगत डिजाइन का समर्थन करता है किएक सार्वजनिक जीवन में क्या शामिल है, और पश्चिम से कुछ अलग तरीके से क्या करना है। मानव होने का क्या अर्थ है, औरएक व्यक्ति होने का क्या अर्थ है, ये वे प्रश्न थे जो उन्होंने पूछे थे?एक प्रथा कैसे रहती है? आधुनिक जनता समय के साथ, अंतर–पीढ़ीगत रूप से, अपने सामंजस्य को कैसे बनाए रखेगी, यदि यह स्वतंत्र और न्यायसंगत सदस्यों वालाएक स्वतंत्र क्षेत्र है? क्या हमारी सार्वजनिक संस्कृति में आस्था का स्थान है और यदि हाँ, तो इसकी प्रकृति क्या है?ऐसी संस्कृतियों में जहाँ अन्याय के विभिन्न प्रकार और डिग्री केवल शोषण पर आधारित नहीं हैं, बल्कि वर्चस्व के गतिशील तरीकों पर आधारित हैं, सामाजिक सहयोग की नींव क्या है?एक साझा जनता कैसे एक साथ रहती है, जिसमें व्यवहार और व्यक्तिगत संस्थानों में व्यक्त किए जाने वाले अंतिम मूल्यों के विभिन्न सिद्धांतों पर केंद्रित बहुलता है? हमएक बड़े समुदाय के साथ कैसे संवाद कर सकते हैं जो उनके जीवन के विभिन्न रूपों और दर्शन को अपनाने का दावा करता है? कार्य और नियंत्रण सीमाएँ क्या हैं? ये मुद्दे कुछ महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक सिद्धांतों जैसे कि अधिकार, प्रतिनिधित्व, वैधता, व्यक्ति, लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, स्वतंत्रता और न्याय से दृढ़ता से जुड़े हुए हैं। हालाँकि, ये चिंताएँ कई या कम से कम कई राजनीतिक सिद्धांतकारों द्वारा विशेष रूप से आध्यात्मिक और सामाजिक संदर्भों में भी उठाई जाती हैं। अंबेडकर ने भी यही हासिल किया। उनके दर्शन का अर्थ औपनिवेशिक बैठक में प्रकाश का संदर्भ और उनका सामाजिक वातावरण था, और उत्तर–औपनिवेशिक कार्य भारतीय संस्कृति थे। सामाजिक समुदाय के प्रतीक के रूप में अंबेडकर पर संकीर्ण जोर भी उस दार्शनिक संदर्भ की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करता है जो उनकी चिंताओं को उचित ठहराता है और उन्हें प्राथमिकता देता है। अंबेडकर में,एक राजनीतिक दार्शनिक के रूप में,ऐसे विशिष्ट दार्शनिक प्रश्न हैं जिन्हें हमें संबोधित करना हैरू वे इतने सारे मुद्दों से घिरे हुए हैं कि राजनीतिक दार्शनिक को उन्हें शामिल नहीं करना चाहिए। प्रस्तुत करने, विवाद करने और बहस करने के उनके तरीके ज्यादातर आध्यात्मिक नहीं बल्कि समाजशास्त्रीय, कानूनी, नैतिक, राजनीतिक और कभी–कभी बयानबाजी वाले होते हैं। इसके अलावा, भारत में राष्ट्रीय क्रांति में लोकतंत्र, मानवीय गरिमा और प्रतिनिधित्व जैसी कई राजनीतिक–दार्शनिक समस्याएं नियमित रूप से पूछताछ के मुद्दे बन गई हैं, जिससे उनकी भागीदारी को दूसरों से अलग करना मुश्किल हो गया है। साथ ही, जबकि अंबेडकर लगातार राजनीतिक सिद्धांत की खोज में नहीं लगे रहे, उनके लेखन और गतिविधियों को रेखांकित करना आवश्यक है। उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए सिद्धांतों और संबंधों में जबरदस्त स्पष्टता और स्थिरता थी।

अम्बेडकर का राजनीतिक दर्शन

राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक कि उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो। सामाजिक लोकतंत्र का क्या अर्थ है? इसका अर्थ हैएकऐसी जीवन शैली जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांतों के रूप में मान्यता देती है। बी. आर. अंबेडकर अंबेडकर अपने समय की कई प्रमुख राजनीतिक प्रथाओं से प्रभावित थे। उनका राजनीतिक चिंतन तीन महान राजनीतिक विचारधाराओं, अर्थात् वामपंथी, रूढ़िवादी और कट्टरपंथी से उत्पन्न हुआ। उन्होंने इन दोनों प्रथाओं को पार कर लिया है, जो उनकी विशेष विशेषता है। यथार्थवादी अमेरिकी और उनके प्रशिक्षक जॉन डेवी के सिद्धांतों ने उन्हें प्रेरित किया था। फैबियन केएडविन आर.ए. सेलिगमैन का उनके दर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव था। उन्होंने ब्रिटिश रूढ़िवादी बुद्धिजीवीएडमंड बर्क का भी हवाला दिया, जबकि अंबेडकर को रूढ़िवादी नहीं कहा जा सकता। अंबेडकर की विचारधारा मुख्य रूप से धार्मिक और नैतिक है। उन्होंने भारतीय मान्यताओं और आध्यात्मिक संरचनाओं का बेजोड़ तरीके से गहन शोध किया। भारतीय संस्कृति और इसकी संस्थाओं की नैतिक उद्देश्यों के लिए कार्रवाई की उनकी व्याख्या पर केंद्रित, उन्होंने स्वतंत्रता, निष्पक्षता, राज्य और विशेषाधिकारों सहित राजनीतिक विचारों को पेश किया।

अम्बेडकर के राजनीतिक प्रतिरोध सिद्धांत

अंबेडकर के राजनीतिक प्रतिरोध के सिद्धांत से पता चलता है कि राजनीतिक प्रतिरोध पर उनका सिद्धांत सामाजिक कट्टरपंथ और राजनीतिक व्यावहारिकता काएक जानबूझकर किया गया मिश्रण था, जो दबाव की राजनीति को उचित रूप से समझता था। राजनीतिक शक्ति के बहुत स्पष्ट उपयोग के साथ सरकार पर दबाव डालने के लिए, उन्होंने दलित वर्गों को सरकार का विरोध करने के लिए सत्याग्रह (अहिंसा) और आंदोलन के दो तरीकों को अपनाने के लिए प्रभावित किया। उन्होंने दोनों तरीकों को मंजूरी दी, लेकिन हमेशा बीच का रास्ता अपनाने की वकालत की क्योंकि उनका मानना था कि सवर्ण हिंदू संघर्ष के बिना अस्पृश्यता को खत्म करने के लिएएकतरफा पहल नहीं करेंगे। अंबेडकर के दृष्टिकोण से, उदार लोकतांत्रिक ढांचे को विकसित करने की प्रक्रिया में, दबाव की राजनीति हिंसक राजनीति से अधिक महत्वपूर्ण है। संघर्ष को राजनीति का दिल मानने के बावजूद, वह कभी भी पूरी तरह से श्गांधी के सत्याग्रह के सिद्धांतश का पालन नहीं करते। जहाँ तक संघर्ष के नैतिक आधार का सवाल है, वह उस सीमा तक गांधी से सहमत थे और नियोजित किए जाने वाले साधनों के लचीलेपन के पक्ष में थे। दरअसल, अंबेडकर का मानना था कि अकेले स्वराज से देश में लोकतांत्रिक क्रांति नहीं आएगी, बल्कि सामाजिक व्यवस्था को उलट–पुलट कर ही यह संभव होगा।

अंबेडकर के राजनीतिक विचारों के निर्माण में कई कारकों का योगदान था। वास्तव में, उन्होंने अपने जीवन के दौरान विभिन्न स्तरों पर जो अनुभव प्राप्त किए – व्यक्तिगत, बौद्धिक और सामाजिक–राजनीतिक – उन्होंने उनके विचारों के निर्माण पर गहरा प्रभाव डाला। भारत और विदेशों में अंग्रेजी शिक्षा के संपर्क ने अंबेडकर को कई समकालीन विचारकों और बुद्धिजीवियों के संपर्क में आने में मदद की। हालाँकि, कुछ मामलों में, संपर्क व्यक्तिगत नहीं था, लेकिन अपने विचारों के माध्यम से, उन विचारकों ने अंबेडकर को बौद्धिक रूप से आकर्षित किया था। अंबेडकर भारतीय समाज सुधारकों के विचारों से बहुत प्रेरित थे। वे भगवान बुद्ध, महात्मा जोतिबा फुले, कबीर और दलित संतों जैसे नंदनार, रविदास और चोखामेला के दार्शनिक विचारों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने अपनी पुस्तक, "अछूत कौन थे और वे अछूत क्यों बन गए?" नंदनार, रविदास और चोखामेला की स्मृति को समर्पित की। तीन प्रसिद्ध संत अछूतों के बीच पैदा हुए थे और अपनी धर्मपरायणता और सदाचार से सभी का सम्मान प्राप्त किया। अंबेडकर ने उन संतों की रूढ़िवादी हिंदुओं को चुनौती देने और दलितों को धार्मिक दिशा–निर्देश देने के लिए प्रशंसा की। अंबेडकरएक अलग तरह के पाठक थे और संस्कृत, फारसी, मराठी, हिंदी और अंग्रेजी में बहुत अच्छे थे। उन्होंने जो किताबें पढ़ीं, उनसे उन्हें बहुत प्रेरणा मिली। इन किताबों का अंबेडकर के सामाजिक न्याय के संघर्ष पर बहुत प्रभाव पड़ा। संस्कृत में

अंबेडकर की दक्षता ने उन्हें हिंदू धर्म के बारे में व्यापक ज्ञान दिया। अंबेडकर महाभारत, रामायण, उपनिषद, मनुस्मृति और अन्य धार्मिक ग्रंथों का पाठ करते थे। अपने व्यापक अध्ययन के कारण, वे इन ग्रंथों की कमियों का आकलन कर सकते थे और अपने स्वयं के सिद्धांत बना सकते थे।

अंबेडकर के राजनीतिक विचारों के सामाजिक पहलू

जाति के मुद्दे, अस्पृश्यता की राजनीति, गांधी और अंबेडकर की बहस को उजागर करना, सामाजिक न्याय पर उनके विचारों ने भारतीय समाज परएक अमिट छाप छोड़ी। अंबेडकर का जन्म असमानता पर आधारित समाज में हुआ था, उन्हें पश्चिम में शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहाँ वे डेवी, हेरोल्ड लास्की, सेलिगमैन और अन्य उदारवादी प्रोफेसरों के प्रभाव में आए। इसलिए, यह स्वाभाविक था कि उन्होंने स्वतंत्रता की भावना को आत्मसात किया। यह बताता है कि वे तानाशाही, निरंकुशता और अधिनायकवाद के खिलाफ क्यों थे।एक सामाजिक दार्शनिक के रूप में, अंबेडकर ने परस्पर संबंधित विचारों की तार्किक संरचना विकसित की थी, जिसका उपयोग उन्होंने सामाजिक घटना को समझाने के साथ–साथ सामाजिक संबंधों के मौजूदा पैटर्न में बदलाव का सुझाव देने के लिएएक सैद्धांतिक ढांचे के रूप में किया। समाज के उस तबके काएक अभिन्न और जैविक हिस्सा होने के नाते, जो पीढ़ियों से संगठित शोषणकारी व्यवस्था का शिकार रहा था, उन्हें सामाजिक व्यवस्था की समस्याओं और जटिलताओं के बारे में स्पष्ट दृष्टि रखने का लाभ था। अंबेडकर ने असमानता और अन्याय को खत्म करने की कोशिश की और शिक्षा के हथियार के माध्यम से अछूतों में सुधार किया।एक अछूत समुदाय में और अपने समुदाय को क्रमिक असमानता और अन्याय और बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित करने वाली व्यवस्था में अंबेडकर का जन्म उनके जीवन कोएक उद्देश्य और मिशन देने के लिए जिम्मेदार था। निस्संदेह, उन्होंने संविधान सभा में संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक न्याय की खोज मेंएक प्रमुख भूमिका निभाई। भेदभाव को रोकने और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संवैधानिक प्रावधान उनकी प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। अंबेडकर का संविधानवाद का दर्शन सामाजिक न्याय और पूरी तरह से संवैधानिक साधनों के माध्यम से परिवर्तन के इर्द–गिर्द घूमता था।

निष्कर्ष

एक राजनेता, विद्वान, दलितों के योद्धा और सबसे बढ़करएक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में, अंबेडकर ने भारतीय इतिहास परएक अमिट छाप छोड़ी है। दलितों के उत्थान में उनके योगदान ने उन्हें दलित वर्गों के बीचएक पंथ बना दिया। वह अब लाखों पीड़ित लोगों के दिल और दिमाग में रहते हैं। वे अब उन्हें अमर आत्मा के रूप में देखते हैं, जिनकी स्मृति राष्ट्र को सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता और समानता के मार्ग पर ले जाएगी। इस प्रकार, सामाजिक न्याय प्राप्त करने, अस्पृश्यता को दूर करने, समानता और स्वतंत्रता और सच्चे लोकतंत्र की स्थापना करने में अंबेडकरवाद आज भी भारतीय समाज के लिए बहुत प्रासंगिक है। लोकतांत्रिक समाजवाद उनके राजनीतिक विचारों का मुख्य स्वर है और संविधानवाद इसे प्राप्त करने काएकमात्र तरीका है। निष्कर्ष में, यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह लेख अंबेडकर के राजनीतिक विचारों पर अधिक गहन और विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करता है कि क्या हम अंबेडकर के राजनीतिक दर्शन के प्रकाश में धार्मिक सहिष्णुता, मानवीय समानता और स्वतंत्रता, समाज में सच्चा लोकतंत्र, न्याय और शांति प्राप्त कर सकते हैं, जिनकी स्मृति हमेशा राष्ट्र को न्याय, स्वतंत्रता और समानता के मार्ग पर मार्गदर्शन करेगी। इसलिए, यह लेख अंबेडकर के लेखन में निहित सैद्धांतिक मुद्दों को प्रतिबिंबित करने के अलावा, उन मुद्दों पर अंबेडकर की स्थिति को भी पकड़ने का प्रयास करता है जिनकी प्रासंगिकता वास्तव में आज भी महसूस की जाती है। अंबेडकर ने जिन जटिल मुद्दों को समझाया और उनका बचाव किया, हालांकि हमेशा कई लोगों की संतुष्टि के लिए नहीं और कभी–कभी उतनी कठोरता से नहीं जितना कि आवश्यक था, उन्होंने आज भी कई समाजों और विशेष रूप से भारत में बौद्धिक और राजनीतिक ध्यान आकर्षित करना जारी रखा है।

डॉ. अंबेडकर के राजनीतिक विचारों का गहराई से विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि उनके संपूर्ण दर्शन की धुरी मानवतावाद है। उनके चिंतन का मुख्य उद्देश्य बीसवीं सदी में अछूत माने जाने वाले दलित मानव समाज को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना, उनकी स्थिति में सुधार लाना, उन्हें सामाजिक और आर्थिक न्याय दिलाना तथा राजनीति में उनकी समान और सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है। स्वतंत्रता, समानता, कानूनी निष्पक्षता, सुशासन, संसदीय प्रणाली, द्विदलीय प्रणाली, व्यक्ति पंथ का विरोध, मानवाधिकार, कुशल और निष्पक्ष नेतृत्व, शक्तियों का पृथक्करण, उग्रवाद विरोधी, संवैधानिक सरकार, तटस्थ प्रशासन, वयस्क मताधिकार आदि उनके राजनीतिक चिंतन के मूल बिंदु थे।एक श्रेष्ठ शासन प्रणाली के सभी लक्षण उनके चिंतन में पाए जाते हैं। इन सभी विचारों के साथ–साथ उन्होंने दलित उत्थान को अपने चिंतन का आधार बनाया और इसके लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे। उन्होंने दलितों से उनके अधिकारों को प्राप्त करने का आह्वान किया। संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने संविधान के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना का सराहनीय प्रयास किया, जिसके लिए भारतीय समाज, विशेषकर दलित समाज युगों–युगों तक उनका ऋणी रहेगा। तत्कालीन परिस्थितियों में उनके विचारों को समसामयिक कहा जा सकता है। यह सही है कि कुछ हद तक उनके विचारों की गलत व्याख्या और दुरुपयोग से समाज में अराजकता फैली, जिसकी आलोचना भी हुई लेकिन आज उनके विचारों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सोनेन ओमप्रकाश, 'भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के आर्थिक विचार', पृष्ठ संख्या–264
2. निकोलस वी. लोगो, कॉलेज के छात्र और राजनीतिः एक साहित्य समीक्षा, पृष्ठ संख्या 1–10
3. राथर मोहम्मद अशरफ और कैथल संतोषी (2015), अम्बेडकर के सामाजिक और राजनीतिक विचार. International Journal of Humanities and Social Science Invention, Vol - 4,Issue -1, पृष्ठ संख्या–5.
4. सुदर्शन डॉ. बी. (2018), "डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के राजनीतिक दर्शन पर विचार", राजनीति विज्ञान विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद, Arahat Multidisciplinary International Education Research Journal, Vol- 6, Issue-1, पृष्ठ संख्या 319.
5. राय डॉ. इशिता आदित्य (2018) ,"बी. आर. अम्बेडकर की राजनीतिक सोचएक आलोचनात्मक मूल्यांकन. International Instute For Science Techbology And Education, Vol -9, पृष्ठ संख्या – 26.
6. दुबे डॉ. कर्णिका (2020), "डॉ. बी. आर अम्बेडकर और उनका राजनैतिक दर्शन", बरकुतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, पृष्ठ संख्या–3301.
7. भैरव जितेन्द्र कुमार (2021), "डॉ. भीम राव अम्बेडकर के सामाजिकएवं राजनीतिक विचारों का विश्लेषण",एसोसिएट प्रोफेसर पॉलीटिकल सांइस, पृष्ठ संख्या–1.

8. रामकृष्ण डॉ. कल्वाकुंता (2019) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिकएवं राजनीतिक विचारएक समसामायिक प्रासंगिकता. International Journal Of Multidisciplinary Education Research, Vol-8, Issue-8, पृष्ठ संख्या – 509.
9. जाटव डी. आर., डॉ. अम्बेडकर का राजनीतिक दर्शन, पृष्ठ संख्या 100–101
10. अम्बेडकर साहब सम्पूर्ण वाडंमय, खण्ड–3, पृष्ठ संख्या–125
11. राव ब्रिजेश कुमार (2007) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों काएक अध्ययन. पी.एच.डी. शोध प्रबंध वी.बी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर : पृष्ठ संख्या–216.
12. सिंह अर्चना (2009) डॉ. बी. आर अम्बेडकर का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन. पी.एच. डी. शोध प्रबंध वी.बी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर : पृष्ठ संख्या–225.
13. आजाद चन्द्र शेखरएवं त्रिपाठी डॉ. विष्णु चन्द्र (2008) भारत की दलित राजनीति और डॉ. भीमराव अम्बेडकर, पी.एच.डी. शोध प्रबंध–वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.) : पृष्ठ संख्या–240.
14. योगानन्दम डॉ. जी. (2010) भारत में आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मुद्दे पर चयनित डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार. International Journal Of Advances In Engineering And Emerging Technology, 1(4) : पृष्ठ संख्या–56.
15. वर्मा डॉ. वीरेन्द्र सिंह (2019) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा गठित राजनीतिक दलों का आधार दलितोंएवं शोषितों हेतु सामाजिक न्याय. IOSR Journal Of Humanities And Social Science, 24(5) : पृष्ठ संख्या–72.
16. बाला रजनीएवं कुमारी अर्चना (2020) अम्बेडकर द्वारा समाज और राजनीतिक पर विचार. Journal Of Critical Reviews, 07(05) : पृष्ठ संख्या–3004.
17. https://ir.nbu.ac.in/server/api/core/bitstreams/939647a0-09ff-4959-afb5-20d60d13f250/content